शीतजल मत्स्य पालन में रोग प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय जन– जागरण एवं प्रशिक्षण

शीतजल मात्स्यिकी अनुसंधाल निदेशालय के चम्पावत केंन्द्र द्वारा जलजीव बीमारियों पर राष्ट्रीय निगरानी परियोजना (नासपैड) के अन्तर्गत दिनांक 29 जुलाई 2017 को शीतजल मत्स्य पालन में रोग प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय जन– जागरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें तोली, रौलमेल, पमतोला, किमवाड़ी, खुनाड़ी,, मझेड़ा, खर्क, डुंगरी फत्यार्ल, कठनौली, मौनपोखरी, खर्ककार्की ,कोटा, मौराड़ी, जौलाड़ी, कोटा, भुम्वाड़ी, चैकुनी, कठाड़, फॅूगर,, मुड़ियानी, सिमल्टा, दुधपोखरा, भिटी आदि के 23 गांवों एवं एस. एस. बी के दो जवानों सहित कार्यक्रम में कुल 50 मत्स्य कृषको ने भाग लिया। इस दौरान कृषकों को मत्स्य तालाबों में पाई जाने वाली बीमारियों एवं उसके निदान हेतु अपनाए जाने वाले उपायों के बारे में विस्तार से बताया गया।

परियोजना के प्रधान अन्वेषक डॉ. सुरेश चन्द्रा, वरिष्ठ वैज्ञनिक ने मत्स्य पालकों को हिमाचल प्रदेश एवं उत्तराखंड के जनपदों में उपयोगी विभिन्न तरह के किए जा रहे कार्यो की जानकारी दी, और मछलियों को एवं उनके तालाबों को स्वस्थ्य रखने के सरल उपाय सुझाए। उन्होनें बताया कि बीमारियों के वजह से कभी– कभी मत्स्य पालकों की भारी हानि पहुचॅती है। अतः इस ओर पालन दौरान विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय स्टेट बैक के मुख्य प्रबंधक श्री हीरा सिंह पांगती ने किसानों से आग्रह किया कि बदलते समय के साथ हमको भी खेती में भी बदलाव की आवश्यकता है। और पशुधन के साथ मछली पालन का एकीकरण इसमें बहुत उपयोगी हो सकता है। श्री एस.के.मलिक वैज्ञानिक ने मत्स्य स्वस्थ्य प्रबंधन की नवीनतम जानकारी उपलब्ध कराई। इस अवसर पर भीमताल से आए वैज्ञानिक श्री रितेश टंडेल, डा. आर. एस. हालदार, ने अपने अनुभवों से किसानों को परिचित कराया एवं एकीकृत मत्स्य पालन में होने वाली मत्स्य स्वास्थ्य सबंधी से परेशानियों एवं उनके उपचार अवगत कराया। श्री ए.के.गिरि एवं राजा आदिल वैज्ञानिक ने किसानो को उपचार विधियों के बारे में अवगत कराया। इस अवसर पर किसानों को प्रशिक्षण किट, उन्नत मत्स्य बीज एवं लाल दवा वितरित की गई। कठाड़ के लक्ष्मण सिह,भीटी कि रघुवर दत्त मुरारी एवं तोली के श्री कृष्णानन्द गहतोड़ी एवं श्री पीताम्बर गहतोड़ी ने अपने अनुभवो की भी किसानों के साथ चर्चा की।